

मानवेन्द्र नाथ राँय का नव -मानववाद - एक आलोचनात्मक मूल्यांकन

डॉ बृजेन्द्र कुमार त्रिपाठी*

असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र, श्री कृष्ण महिला महाविद्यालय, बेगूसराय

सारांश - एम एन राँय एक प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय विचारक और कार्यकर्ता थे। उन्होंने एक राष्ट्रवादी क्रांतिकारी के रूप में अपना करियर शुरू किया, बाद में वे समाजवाद और मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हुए। वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। भारत की मूल अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी व मार्क्सवादी दुनिया में एक अंतरराष्ट्रीय शख्सियत बन गए और अंततः मार्क्सवादी विचारधारा की आलोचना करते हुए नए मानवतावाद या कहरपंथी मानवतावाद के अपने स्वयं के दर्शन को विकसित किया। बीसवीं शताब्दी के कुछ अन्य भारतीय विचारकों के विपरीत, राँय ने अपने विचार में दर्शन और धर्म के बीच स्पष्ट अंतर किया है। एम. एन. राँय का क्रांतिकारी या नया मानवतावाद पूंजीवाद के खिलाफ मार्क्सवादी क्रांति का प्रतिबिंब है।

मुख्य शब्द - मानवतावाद, भौतिकवाद, कहरपंथी लोकतंत्र, राष्ट्रवाद ।

-----X-----

जीवनिक रेखाचित्र

मानवेन्द्रनाथ राँय का जन्म 1887 में पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले (कोलकाता के पास) के अरबालिया गांव में हुआ था। उनका मूल नाम नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य था। अपने कॉलेज के दिनों के दौरान उन्होंने गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया। अभियोजन से बचने के लिए अपने जीवन काल में उन्होंने कई बार अपना नाम बदला। वह प्रकाशचंद्र डे, जतिन मुखर्जी जैसे बंगाल के क्रांतिकारियों से निकटता से जुड़े थे। उन्होंने जर्मनी, जापान, चीन, अमेरिका, मैक्सिको और यूएसएसआर का दौरा किया। 1915 में उन्हें भारतीय क्रांतिकारियों ने अपने प्रतिनिधि के रूप में जर्मनी भेजा था। राँय मैक्सिको और भारत दोनों में कम्युनिस्ट पार्टियों के संस्थापक थे और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के कांग्रेस के प्रतिनिधि थे। उनसे जर्मन अधिकारियों से बात करने और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए मदद लेने की उम्मीद की गई थी। धनगोपाल मुखर्जी ने उन्हें नया नाम दिया - "मानवेन्द्रनाथ राँय।" संयुक्त राज्य अमेरिका में रहते हुए वह लाला लाजपत राय के प्रभाव में आ गया। वह समाजवादी विचारधारा की ओर आकर्षित थे। उन्होंने समाजवादी विचारों

का अध्ययन किया और मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हुए। बाद में वे मैक्सिको गए, उस देश में कम्युनिस्ट आंदोलन में भाग लिया, मैक्सिको में अन्य मार्क्सवादी विचारकों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान किया और एक संपूर्ण मार्क्सवादी बन गए। 1936 से 1954 तक उन्होंने धीरे-धीरे खुद को साम्यवाद से दूर कर लिया और अपनी विचारधारा विकसित की। वे 1940 तक कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे। 1940 में कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में अपनी हार के बाद उन्होंने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी। उन्होंने रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। राँय ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं पर विस्तार से लिखा।

राजनीतिक विचार

वह अपने विचारों के विकास के तीन चरणों से गुजरे - राष्ट्रवाद (1915 तक), मार्क्सवाद (1915-1946), और कहरपंथी मानवतावाद (1946-1954)।

एम.एन. राँय की मार्क्सवाद की अवधारणा

मार्क्सवादी के रूप में राँय का बपतिस्मा 1917 में मैक्सिको में शुरू हुआ, जहाँ उन्होंने बोसोडिन के साथ मार्क्सवाद को उत्कृष्टता के दर्शन के रूप में स्वीकार किया। 1-आईसी ने मार्क्सवाद के सभी प्रमुख सिद्धांतों को स्वीकार किया और मार्क्सवादी जीवन के साथ भारतीय स्थिति की व्याख्या करने की मांग की। एम.एन. राँय ने कहा कि क्रांति का संबंध अंतिम चीजों से है, और क्रांतिकारी की पहली आवश्यकता एक दर्शन है और दर्शन की उनकी पहली पसंद 1940 के दशक की शुरुआत तक मार्क्सवाद थी। उन्होंने मार्क्सवादी दर्शन को इस तरह से बदल दिया कि यह स्वतंत्रता के दर्शन के रूप में प्रकट होता है। राँय मार्क्स के मूल मानवतावाद और उनके सामाजिक लक्ष्य से प्रेरित थे। वह मार्क्स को अनिवार्य रूप से एक मानवतावादी और मानव स्वतंत्रता का प्रेमी मानते थे। मार्क्स की तरह, राँय ने प्रकृति के साथ निरंतर संबंध में मनुष्य के भौतिक अस्तित्व को माना, जिसमें मनुष्य सक्रिय भूमिका निभाता है। वह मार्क्स के मूल सिद्धांत "अस्तित्व चेतना को निर्धारित करता है" से भी प्रेरित थे। वह मार्क्स से सहमत थे कि आत्म-संरक्षण के लिए जैविक आग्रह गतिशील शक्ति थी। फिर से, मार्क्स का समाजवाद "राज्य की स्वतंत्रता के रूप में" जहां मानवीय तर्क तर्कहीन ताकतों पर विजय प्राप्त करेगा, जो अब वह मनुष्य के जीवन पर अत्याचार करता है और एक तर्कसंगत प्राणी के रूप में मनुष्य अपने भाग्य को नियंत्रित करेगा, वह भी उसका आदर्श था।

राँय मार्क्सवाद को साम्यवाद के साथ नहीं पहचानते हैं मार्क्सवाद एक दर्शन है जबकि साम्यवाद एक राजनीतिक अभ्यास है। राँय उत्पादन की प्रक्रिया के समाजीकरण में विश्वास करते थे। जब श्रम सामूहिक रूप से किया जाता है, तो उसके उत्पाद का सामूहिक स्वामित्व होना चाहिए। निजी संपत्ति को समाप्त करने से पहले एक आर्थिक आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए। राँय ने सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को खारिज कर दिया, साम्यवाद को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

एम.एन. मार्क्सवाद पर राँय की आलोचना

राँय के लिए, "मैं कभी भी रूढ़िवादी मार्क्सवादी नहीं रहा। मार्क्सवाद के प्रति मेरा रवैया शुरू से ही आलोचनात्मक था।" राय कई बिंदुओं पर मार्क्सवाद से भिन्न थे। हालांकि राँय ने ऐतिहासिक भौतिकवाद के मार्क्सवादी दर्शन और समाजशास्त्र की आलोचना की, लेकिन उन्होंने मार्क्सवादी अर्थशास्त्र की तकनीकी पर कभी टिप्पणी नहीं की। उन्होंने पूंजी के संचय के मार्क्सवादी सिद्धांतों, पूंजीवादी प्रजनन और

मूल्य के श्रम सिद्धांत में संभावित विरोधाभास, मूल्य उत्पादन सिद्धांत और इसी तरह के मुद्दों पर कोई टिप्पणी नहीं की। राँय एक व्यक्ति के रूप में मार्क्स के लिए सभी प्रशंसा कर रहे थे, पूर्व ने अपने दर्शन और समाजशास्त्रीय लेखन के माध्यम से मार्क्सवादी पूर्ववृत्त और संबद्धता से स्पष्ट रूप से अलग होने का संकेत दिया। संक्षेप में, राँय मार्क्स को एक मानवतावादी और स्वतंत्रता का प्रेमी मानते हैं। जहां तक मार्क्स की शिक्षाओं का संबंध है, राँय ने या तो उन्हें खारिज कर दिया या महत्वपूर्ण संशोधन किए।

राँय ने बताया कि मार्क्स के द्वंद्ववात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत ही बेतुका था। राँय के लिए, द्वंद्ववात्मकता की पद्धति विचारधारा के दायरे में लागू हो सकती है, भौतिकवाद पर नहीं। इसलिए मार्क्स का द्वन्द्ववात्मक भौतिकवाद केवल नाम का था, वह अनिवार्य रूप से एक आदर्शवादी व्यवस्था थी। इस प्रकार, राँय मार्क्स द्वारा मनुष्य को स्वायत्तता की अस्वीकृति की आलोचना करते हैं। मार्क्स ने हालांकि वर्ग संघर्ष का महिमामंडन किया, लेकिन अनुभवजन्य व्यक्ति पर जोर नहीं दिया। यद्यपि थीसिस और विरोधी थीसिस के माध्यम से आंदोलन एक तार्किक तर्क प्रतीत होता है, राँय के अनुसार, यह कहना हास्यास्पद है कि पदार्थ और उत्पादन की ताकतें द्वंद्ववात्मक रूप से चलती हैं। उनका दृढ़ विश्वास था कि द्वंद्ववात्मक भौतिकवाद केवल नाम में भौतिकवादी है और द्वंद्ववात्मकता आधारशिला है; यह प्रकृति में अनिवार्य रूप से आदर्शवादी है। यही कारण है कि राँय का मानना था कि मार्क्स ने वैज्ञानिक प्रकृतिवाद और फ्यूरबैक और उनके अनुयायियों के मानवतावादी भौतिकवाद को भी खारिज कर दिया था।

राँय का दृढ़ विश्वास था कि इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या दोषपूर्ण है क्योंकि इसने सामाजिक प्रक्रिया में मानसिक गतिविधि की कोई भूमिका नहीं होने दी। इतिहास की व्याख्या केवल भौतिकवादी वस्तुवाद के संदर्भ में ही नहीं की जा सकती है। मनुष्यों की बुद्धि और उनकी संचयी क्रियाएँ बहुत शक्तिशाली सामाजिक शक्तियाँ हैं। इसके अलावा, चेतना को वास्तविकता के पीछे के रूप में माना जाता है। राँय ने मार्क्स द्वारा परिकल्पित इतिहास की आर्थिक व्याख्या की आलोचना की। राँय के लिए, मार्क्स ने आजीविका कमाने के लिए आदिम मनुष्य के बुद्धिमान प्रयास और अस्तित्व के लिए जैविक संघर्ष के बीच एक गलत अंतर किया। मार्क्स ने गलत तरीके से माना था कि समाज की उत्पत्ति और उसके बाद के

मानव विकास आर्थिक रूप से प्रेरित थे। रॉय के लिए शारीरिक आग्रह और आर्थिक मकसद दोनों अलग थे। रॉय ने आलोचना की कि सामाजिक संबंधों में प्रवेश करने से पहले मार्क्स ने मनुष्य बनने की पूरी प्रक्रिया को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया। इस प्रकार, आर्थिक नियतत्ववाद आवश्यक रूप से भौतिकवाद के दर्शन से तार्किक परिणाम के रूप में अनुसरण नहीं करता है। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि दार्शनिक भौतिकवाद और इतिहास की आर्थिक व्याख्या के बीच कोई आवश्यक और अपरिहार्य संबंध नहीं है। एक अस्थिर मनोवैज्ञानिक आधार के कारण मार्क्सवाद की नैतिक नींव सापेक्षवादी और हठधर्मी हैं।

राय ने वर्ग संघर्ष के समाजशास्त्र की अवधारणा की आलोचना की। यद्यपि कई सामाजिक वर्ग हैं और इन वर्गों के बीच तनाव की उपस्थिति के बावजूद, वे सभी एकजुट तरीके से काम कर रहे हैं। मार्क्स अपनी भविष्यवाणी के साथ पूरी तरह विफल साबित हुए कि मध्यम वर्ग गायब हो जाएगा। वास्तव में, आर्थिक प्रक्रिया के विस्तार से मध्यम वर्ग की संख्या में भी वृद्धि होती है। रॉय क्रांतियों में स्वैच्छिक रूमनियत की अवधारणा में विश्वास करते थे। क्रांतियां भावनाओं का सामूहिक निरूपण हैं जो एक पिच तक बढ़ जाती हैं। वास्तव में, एक क्रांति मनुष्य द्वारा एक बेहतर दुनिया बनाने के प्रयास को दर्शाती है। तो, क्रांतिकारी रूमनियतवाद द्वंद्ववात्मक नियतत्ववाद की अवधारणा के खिलाफ है।

कट्टरपंथी मानवतावाद/नए मानवतावाद

मानवतावाद लैटिन शब्द ह्यूमनस से लिया गया है, जिसका अर्थ सामान्य रूप से मानवीय मामलों से संबंधित विचार प्रणाली है। मानवतावाद एक दृष्टिकोण है जो मनुष्य और उसके संकायों, मामलों और आकांक्षाओं को प्राथमिक महत्व देता है। मानवतावाद का सार वह महत्व है जो मनुष्य, व्यक्ति को मानवीय गतिविधियों की सभी आकांक्षाओं के केंद्र के रूप में रखा जाता है। रैडिकल मानवतावाद राजनीतिक चिंतन की दिशा में एम.एन. रॉय का प्रमुख योगदान है। रैडिकल या न्यू ह्यूमनिज्म के बारे में रॉय के विचार जर्मन उद्योगपति फ्रेडरिक एंगेल्स के लेखन से प्रेरित थे, जिन्होंने कार्ल मार्क्स के साथ कम्युनिस्ट घोषणापत्र का सह-लेखन किया था। अपने जीवन के बाद के वर्षों में, रॉय "नए मानवतावाद" के प्रतिपादक बन गए। रॉय ने इसे "क्रांति का नया दर्शन" कहा, जिसे उन्होंने अपने जीवन के बाद के हिस्से में विकसित किया, "नया मानवतावाद" या "कट्टरपंथ"। नए मानवतावाद के दर्शन का सार रॉय के

"रैडिकल डेमोक्रेसी के सिद्धांतों पर थीसिस" या "रैडिकल ह्यूमनिज्म के ट्वेंटी-टू थीसिस" में निहित है। रॉय ने इस दर्शन को अपने न्यू ह्यूमनिज्म - ए मेनिफेस्टो में आगे बढ़ाया, जिसे पहली बार 1947 में प्रकाशित किया गया था। उन्होंने इसे अन्य मानवतावादी दर्शन से अलग किया और इसे कट्टरपंथी करार दिया। यद्यपि रॉय अपने दृष्टिकोण से हॉब्स के वैज्ञानिक भौतिकवाद, स्पिनोज़ा की नैतिकता और लोके द्वारा प्रतिपादित धर्मनिरपेक्ष राजनीति से प्रभावित हैं, उन्होंने इन सभी को आवश्यकता की अवधारणा के साथ स्वतंत्रता के एक तर्कसंगत विचार को प्रतिपादित करने के लिए समेट दिया। रॉय के कट्टरपंथी मानवतावाद का केंद्रीय उद्देश्य एक अद्वैतवादी व्यवस्था में सामाजिक दर्शन और नैतिकता के साथ प्रकृति के दर्शन का समन्वय करना है। "यही कारण है कि रॉय इसे मानवतावादी के साथ-साथ भौतिकवादी, प्रकृतिवादी के साथ-साथ राष्ट्रवादी, रचनात्मकतावादी और साथ ही निर्धारक के रूप में दावा करते हैं"।

नया मानवतावाद, जैसा कि ट्वेंटी-टू थीसिस में प्रस्तुत किया गया है, का एक आलोचनात्मक और एक रचनात्मक पहलू है। महत्वपूर्ण पहलू में साम्यवाद (इतिहास की आर्थिक व्याख्या सहित), और औपचारिक संसदीय लोकतंत्र की अपर्याप्तता का वर्णन करना शामिल है। दूसरी ओर, रचनात्मक पहलू में व्यक्तियों की स्वतंत्रता को उच्चतम मूल्य देना, इतिहास की मानवतावादी व्याख्या प्रस्तुत करना और कट्टरपंथी लोकतंत्र के आदर्श को प्राप्त करने के तरीके के साथ-साथ कट्टरपंथी या संगठित लोकतंत्र की तस्वीर को रेखांकित करना शामिल है। रॉय के अनुसार, ट्वेंटी-टू थीसिस का केंद्रीय विचार यह है कि "राजनीतिक दर्शन इस मूल विचार से शुरू होना चाहिए कि व्यक्ति समाज से पहले है, और स्वतंत्रता केवल व्यक्तियों द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है"। राय के अनुसार स्वतंत्रता की खोज और सत्य की खोज मानव प्रगति की मूल प्रेरणा है। सर्व-तर्कसंगत मानव प्रयास का उद्देश्य, व्यक्तिगत और साथ ही सामूहिक, निरंतर बढ़ती हुई स्वतंत्रता की प्राप्ति है। व्यक्तियों को उपलब्ध स्वतंत्रता की मात्रा सामाजिक प्रगति का पैमाना है।

कट्टरवाद में मार्क्सवाद के सभी सकारात्मक तत्व शामिल हैं जो इसकी भ्रांतियों से मुक्त हैं और अधिक वैज्ञानिक ज्ञान के आलोक में स्पष्ट किए गए हैं। रॉयस मानवतावादी बौद्धिक कार्य हचसन, शाफ्ट्सबरी और बेंथम जैसे दार्शनिक कट्टरपंथियों से बहुत प्रभावित हैं, जिनका

समकालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण था। इन दार्शनिक कट्टरपंथियों ने नैतिक समस्याओं के प्रति एक व्यक्तिवादी दृष्टिकोण की वकालत की। यह समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक संकट के खिलाफ प्रतिक्रिया थी। कट्टरपंथी मानवतावाद के घोषणापत्र में कहा गया है कि, "आध्यात्मिक रूप से मुक्त पुरुषों और महिलाओं के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से कट्टरपंथी लोकतंत्र का आदर्श प्राप्त किया जाएगा, जो स्वतंत्रता की एक नई व्यवस्था बनाने के दृढ़ संकल्प के साथ एक राजनीतिक दल में एकजुट होंगे। पार्टी के सदस्य करेंगे लोगों के मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक होने के बजाय स्वतंत्रता के लक्ष्य के अनुरूप शासक होंगे; पार्टी का राजनीतिक व्यवहार तर्कसंगत और नैतिक होगा।

राँय के कट्टरपंथी/नए मानवतावाद की विशेषताएं

राँय का विचार मनुष्य के इर्द-गिर्द घूमता है। "यह वह व्यक्ति है जो अपने स्वयं के कल्याण के लिए समाज, राज्य और अन्य दृष्टांतों और मूल्यों का निर्माण करता है। मनुष्य के पास इसके अधिक कल्याण और सुविधा के लिए उन्हें बदलने की शक्ति है। उनका विश्वास "मनुष्य को हर चीज के माप के रूप में" में निहित है। एक कट्टरपंथी के रूप में मानवतावादी, उनका दार्शनिक दृष्टिकोण व्यक्तिवादी है। व्यक्ति को किसी राष्ट्र या वर्ग के अधीन नहीं किया जा सकता है। व्यक्ति को ऐसी धारणाओं के सामूहिक अहंकार में अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए। मनुष्य का होना और बनना, उसकी भावनाएं, इच्छा और विचार निर्धारित करते हैं उसकी जीवन शैली। उसके पास दो बुनियादी लक्षण हैं, एक, कारण और दूसरा, स्वतंत्रता का आग्रह। मनुष्य में कारण ब्रह्मांड के सामंजस्य को प्रतिध्वनित करता है। स्वतंत्रता की यह इच्छा उसे ज्ञान की खोज की ओर ले जाती है। मैं स्वतंत्रता को मानता हूं सर्वोच्च मूल्य का होना। जबकि तर्कसंगतता एक व्यक्ति को गतिशीलता प्रदान करती है, स्वतंत्रता की इच्छा उसे दिशा देती है। राँय की मानव प्रकृति की अवधारणा समाज और राज्य का आधार बन जाती है। वह अपनी स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए मनुष्य के कार्य के लिए उनकी उत्पत्ति का श्रेय देता है मी और भौतिक संतुष्टि।

राँय सामाजिक विकास का एक सांप्रदायिक पैटर्न प्रस्तुत करते हैं। मनुष्यों के समूह खेती और समाज के संगठन के लिए विशेष इलाकों में बस गए, प्रत्येक समूह अपने सामूहिक डोमेन के रूप में एक क्षेत्र की पहचान करता है। स्वामित्व सामान्य है क्योंकि भूमि पर पूरे समुदाय के श्रम

द्वारा खेती की जाती है। सामूहिक श्रम का फल सामूहिक रूप से सभी को मिलता है। ये ज्यादा दिन नहीं चलता। निजी संपत्ति की उत्पत्ति के साथ, नए संबंधों को नियंत्रित करने के लिए एक ही अधिकार की आवश्यकता उत्पन्न होती है; यह बासी को जन्म देता है। राँय ने राज्य को 'समाज के राजनीतिक संगठन' के रूप में परिभाषित किया। राज्य का विकास न केवल ऐतिहासिक है, बल्कि प्राकृतिक भी है। उसके लिए, राज्य का अस्तित्व होना चाहिए और अपने सीमित कार्यों का निर्वहन करना चाहिए। कट्टरपंथी लोकतंत्र की मूल विशेषता यह है कि लोगों के पास संप्रभु शक्ति का प्रभावी ढंग से प्रयोग करने के तरीके और साधन होने चाहिए। शक्ति का वितरण इस प्रकार किया जाएगा कि अधिकतम शक्ति स्थानीय लोकतंत्र में निहित हो और न्यूनतम शीर्ष पर अन्य समान रूप से महत्वपूर्ण और स्वायत्त सामाजिक संस्थाओं के साथ राज्य के कार्यों को न्यूनतम कर देता है।

उन्होंने कट्टरपंथी लोकतंत्र में शिक्षा पर अधिक जोर दिया। एक क्रांतिकारी मानवतावादी के रूप में, राँय का मानना था कि क्रांति वर्ग संघर्ष या सशस्त्र हिंसा के माध्यम से नहीं, बल्कि शिक्षा के माध्यम से लाई जानी चाहिए। राँय ने नैतिक मनुष्य की अवधारणा पर जोर दिया। उनके लिए राजनीति को नैतिकता से अलग नहीं किया जा सकता। राँय मनुष्य में तर्कसंगतता के लिए नैतिकता का पता लगाते हैं। कारण ही नैतिकता की एकमात्र स्वीकृति है, नैतिक पुरुषों के बिना नैतिक समाज नहीं हो सकता। राँय मानवतावादी राजनीति की वकालत करते हैं। इससे राजनीति का शुद्धिकरण और युक्तिकरण होगा। उनके लिए बिना सत्ता के राजनीति की जा सकती है। "दलीय राजनीति ने सत्ता की राजनीति को जन्म दिया है"। उनके लिए पार्टी की कोई भी सरकार ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए होती है, लेकिन यह कभी भी लोगों की और लोगों के द्वारा नहीं होती है। भारत जैसे देश में, वह मौजूद दलगत राजनीति की बुराइयों के बारे में शोक करता है, जहां अज्ञानी रूढ़िवादी लोगों का चुनाव में शोषण किया जाता है। इस प्रकार, उन्होंने पार्टी प्रणाली के उन्मूलन को प्राथमिकता दी, जो सत्ता के प्रोत्साहन के बिना राजनीति को संचालित करने में सक्षम बनाएगी। उस भ्रष्ट करने वाली एजेंसी के अभाव में, राजनीतिक व्यवहार में नैतिकता संभव होगी।

राँय ने अहिंसक तरीकों से अत्याचार और उत्पीड़न का विरोध करने के लिए 'लोगों की सहमति से क्रांति' की

वकालत की। रॉय ने आगे मानवतावाद को सर्वदेशीय मानवतावाद के रूप में माना है क्योंकि यह स्वायत्त राष्ट्रीय राज्यों के अस्तित्व को नकारता है। रॉय पश्चिमी लोकतंत्र के पैटर्न से सहमत नहीं हैं। उन्हें लगता है कि पश्चिमी लोकतंत्र भी उतना ही निराशाजनक है। रॉय के अनुसार, पार्टी के चरित्र का आकलन सरकार के रिकॉर्ड के आधार पर किया जाना चाहिए।

कट्टरपंथी लोकतंत्र पर रॉय की धारणा

रॉय राजनीतिक उदार लोकतंत्र के बजाय एक कट्टरपंथी लोकतंत्र का सुझाव देते हैं। कट्टरपंथी लोकतंत्र एक प्रकार का लोकतंत्र है जिसे दार्शनिक अभिविन्यास के आधार पर स्थापित किया गया है। रॉय के अनुसार, समाज का ऐसा संगठन मनुष्य के लिए पर्याप्त अवसर खोल सकता है, यह स्वतंत्र व्यक्तियों के नियंत्रण में राज्य की कार्यकारी शक्ति का स्थान लेगा। समय-समय पर होने वाले चुनावों की इच्छा के आधार पर कट्टरपंथी लोकतंत्र को जीवित नहीं रखा जाना चाहिए। उन्होंने आगे तर्क दिया कि लोगों के लिए सरकार पूरी तरह से लोगों की और लोगों द्वारा सरकार नहीं हो सकती है। लोकतंत्र को पार्टियों से ऊपर रखा जाएगा। एक कट्टरपंथी लोकतंत्र एक प्रकार का लोकतंत्र होगा जिसका उद्देश्य लोगों के बीच जागरूक और एकीकृत प्रयास को प्रोत्साहित करना है, जो व्यक्तियों की स्वतंत्रता, स्वतंत्र सोच की भावना और व्यक्तियों की इच्छा को सुनिश्चित करता है। कंधे से कंधा मिलाकर यह बाहरी ताकतों का विरोध करेगा जो राज्य की प्रगति के लिए हानिकारक होगा। इस प्रकार, लोकतंत्र को साकार करने और अपनी रक्षा करने में सक्षम होने के लिए तर्कवाद, व्यक्तिवाद और सर्वदेशीय मानवतावाद पर आधारित एक नया पुनर्जागरण आवश्यक है। कट्टरपंथी लोकतंत्र को आध्यात्मिक रूप से मुक्त पुरुषों और महिलाओं के सामूहिक प्रयासों से प्राप्त किया जा सकता है। जैसा कि यह आध्यात्मिक रूप से मुक्त पुरुषों और महिलाओं की स्वतंत्रता का एक नया आदेश बनाकर पूरा किया गया है, यह तानाशाह शासकों के बजाय लोगों के मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक के रूप में कार्य करेगा। उनका राजनीतिक व्यवहार तर्क और नैतिकता दोनों के सुसंगत समामेलन के साथ तर्कसंगत होगा। रॉय के लिए, "आध्यात्मिक रूप से मुक्त व्यक्ति मामलों के शीर्ष पर गुलामी की सभी जंजीरों को तोड़ देंगे और सभी की स्वतंत्रता की शुरुआत करेंगे"।

कट्टरपंथी लोकतंत्र के सिद्धांत

- मनुष्य समाज का आदर्श है; सहकारी सामाजिक संबंध व्यक्तिगत क्षमताओं को विकसित करने में योगदान करते हैं।
- स्वतंत्रता की खोज और सत्य की खोज मानव प्रगति की मूल प्रेरणा है।
- सभी तर्कसंगत मानवीय प्रयासों का उद्देश्य, व्यक्तिगत और साथ ही सामूहिक, निरंतर बढ़ती हुई स्वतंत्रता की प्राप्ति है।
- कानून द्वारा शासित भौतिक प्रकृति की पृष्ठभूमि से निकलकर, मनुष्य अनिवार्य रूप से तर्कसंगत है।
- इतिहास की आर्थिक व्याख्या भौतिकवाद की गलत व्याख्या से कम हो जाती है।
- विचार एक दार्शनिक प्रक्रिया है जो पर्यावरण के प्रति जागरूकता से उत्पन्न होती है
- स्वतंत्रता की एक नई दुनिया बनाने के लिए, क्रांति को समाज के आर्थिक पुनर्गठन से परे जाना चाहिए
- साम्यवाद या समाजवाद स्वतंत्रता के लक्ष्य की प्राप्ति का बोधगम्य साधन हो सकता है।
- राज्य समाज का राजनीतिक संगठन होने के कारण, साम्यवाद के तहत इसका लुप्त होना एक यूटोपिया है जिसे अनुभव द्वारा विस्फोटित किया गया है।
- राज्य का स्वामित्व और नियोजित अर्थव्यवस्था अपने आप श्रम के शोषण को समाप्त नहीं करती है; न ही वे आवश्यक रूप से धन के समान वितरण की ओर ले जाते हैं।
- अनुभव में औपचारिक संसदीय लोकतंत्र की खामियां भी उजागर हुई हैं।
- स्वाधीनता की दुनिया बनाने के संकल्प में एकजुट आध्यात्मिक रूप से मुक्त पुरुषों के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से कट्टरपंथी लोकतंत्र के आदर्श को प्राप्त किया जाएगा।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

राय एक स्वतंत्र चिंतन व प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने वाले विचारक थे। उन्होंने मार्क्सवाद की कठोरता पर प्रहार करके मनुष्य को साम्यवाद के जाल से बाहर निकाला और उसकी स्वतंत्रता की जोरदार वकालत की। उसने अपनी मौलिक मानवतावाद की विचारधारा की स्थापना द्वारा मनुष्य को अपने चिंतन में प्रमुख स्थान प्रतिष्ठित किया। लेकिन इसके बावजूद भी राय की मौलिक मानवतावाद की विचारधारा अधिक लोकप्रिय नहीं हो सकी

और उसकी अनेक आधारों पर आलोचना की जाने लगी उसकी आलोचना के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं।

धर्म सभ्यता व नैतिकता के विकास के लिए आवश्यक- राय ने धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाकर भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास का मार्ग अवरुद्ध किया है। धर्म भारतीय संस्कृति व सभ्यता के विकास का आवश्यक तत्व रहा है। सभी वेद शास्त्रों में धर्म का प्रभाव निसंकोच स्वीकार किया गया है। राय ने एक भारतीय चिंतक होकर भारतीय सभ्यता को विकसित करने वाले जरूरी तत्व की अवहेलना कर दी है।

राय की स्वतंत्रता नकारात्मक है- राय ने व्यक्ति की स्वतंत्रता पर बहुत अधिक बल दिया है। उसने धर्म और राज्य को स्वतंत्रता के रास्ते में रुकावट माना है। यद्यपि उनका यह विचार उचित है कि सच्ची स्वतंत्रता राज्य के कानूनों का पालन करने में है, विरोध करने में नहीं परंतु उसने व्यक्ति की स्वतंत्रता को सुनिश्चित बनाने के लिए राज्य जैसी अनिवार्य संस्था को भी बलि देनी चाहिए, ऐसा मान लिया है। वास्तव में व्यक्ति की स्वतंत्रता के मार्ग की वास्तविक बाधाएं राज्य ना होकर व्यक्ति की निरंतर प्रवृत्तियां तथा इंद्रिय पर इच्छाएं हैं। इन पर नियंत्रण पाकर ही मनुष्य सच्ची स्वतंत्रता का उपभोग कर सकता है।

तार्किक दोष- राय को व्यक्ति की स्वतंत्रता की इच्छा को जन्मजात बताया है। व्यक्ति स्वतंत्रता के लिए निरंतर संघर्ष करता रहता है। लेकिन इस बात की क्या गारंटी है कि वह संघर्ष लड़ाई झगड़े का रूप नहीं लेगा। राय में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को स्थान देकर संयुक्त स्वतंत्रता को चोट पहुंचाई है।

भौतिकवाद के आधार पर आलोचना- राय ने भौतिकवाद को महत्व देते हुए कहा है कि प्रकृति और संसार अपने बल पर जीवित है इसमें किसी दैवीय सत्ता का हाथ नहीं है। मनुष्य में बुद्धि और नैतिकता भौतिक प्रकृति से प्राप्त हुए हैं और इसी के अंदर समाहित हैं। राय ने यह विचार देकर भारतीय अध्यात्म व आत्मा का अस्तित्व नकार दिया है।

व्यक्ति व समाज के संबंधों के आधार पर आलोचना- राय ने समाज में व्यक्ति को सर्वाधिक महत्व दिया है। व्यक्ति राय के मानवतावादी चिंतन व समाज का आधार है। व्यक्ति समाज से पहले है समाज व्यक्ति के लिए है, ऐसा मानवेन्द्र नाथ राय की मान्यता है, परंतु राय की यह दृष्टि गलत है। व्यक्ति का समाज के बिना कोई महत्व नहीं है अस्तु जैसे

दार्शनिकों ने व्यक्ति को एक सामाजिक प्राणी माना है। इसलिए समाज के बिना उसकी कल्पना करना असंभव है।

मनुष्य की विवेक शीलता पर अधिक जोर- राय ने व्यक्ति को एक विवेकशील प्राणी मानकर उस पर ही अपना मानवतावाद का सिद्धांत खड़ा किया है। लेकिन यह बात भूल गया है कि मनुष्य में विवेक के साथ साथ भावनाओं का भी काफी महत्व है। इतिहास साक्षी है कि मनुष्य ने अनेक कार्य विवेक की बजाय भावनात्मक होकर किए हैं।

राज्य एक अनिवार्य संस्था है- राय ने व्यक्ति की स्वतंत्रता के चक्कर में राज्य को महत्वहीन संस्था बना दिया है। उसके अनुसार राज्य व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न करता है। समाज के समस्त संस्थाएं राज्य पर ही आधारित होती हैं। इसलिए राज्य एक अनिवार्य संस्था है। समाज में व्यक्ति का जीवन शांति में बढ़ाने के लिए राज्य आवश्यक कानूनों का निर्माण करके उन्हें लागू करता है। इसलिए राज्य को महत्वहीन संस्था मानना राय की बड़ी भूल है।

शक्तिहीन राजनीति असंभव है- राय ने वर्तमान राजनीति को शक्ति प्राप्ति के लिए संघर्ष कहा है। इस को बढ़ावा देने में राजनीतिक दलों का हाथ होता है। इसलिए उसने लोगों को नैतिकता का पाठ पढ़ा कर राजनीति को नैतिकता पर आधारित करने की बात कही है। परंतु आधुनिक युग में शक्तिहीन राजनीति की कल्पना करना निरर्थक है। राज्य की प्रमुख विशेषता है शक्ति के बिना राजनीति नहीं चल सकती है।

मौलिक लोकतंत्र अव्यवहारिक है- राय का मौलिक लोकतंत्र उसके मानवतावाद का अटूट अंग है, लेकिन बाद में इसे लागू करना असंभव है। राय ने दलों को समाप्त करके प्रजातंत्र को दलविहीन करने की जो बात की है वह किसी भी रूप में उचित नहीं है। आधुनिक लोकतंत्र में दलों का बहुत महत्व है। दल लोगों को राजनीतिक शिक्षा देते हैं। लोगों की प्रभुसत्ता का सिद्धांत दल ही लागू करते हैं।

राष्ट्रवाद विरोधी भावना- राय का मानवतावाद राष्ट्र विरोधी है। राय ने राष्ट्रियता की अवहेलना करके समाज की कल्पना की है। उसने अपने मानवतावाद के चक्कर में राष्ट्रवाद की बलि दे दी है। जो व्यक्ति राष्ट्रियता की भावना से प्रेरित होकर अपने पड़ोसी को भाई ना समझता हो, वह विश्व बंधुत्व के लक्ष्य को कैसे प्राप्त करेगा।

जैसा कि चर्चा से पता चलता है, एमएन रॉय के राजनीतिक विचारों के विकास में दो अलग-अलग चरण हैं: पहला, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद को समझने की कोशिश करते हुए मार्क्सवाद का आँख बंद करके अनुसरण करने के बजाय, रॉय ने रचनात्मक तरीके से मार्क्सवाद की पुनर्व्याख्या की। यह सुझाव देकर कि उपनिवेशों में राष्ट्रवादी ताकतों को मजबूत करने की जरूरत है, उन्होंने मार्क्सवादियों को सबसे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की, जो एक विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में 'स्वदेशी पूंजीपति वर्ग' के ऐतिहासिक महत्व को समझने में विफल रहे। यह निस्संदेह एक अभिनव विचार था जो उपनिवेशों के खिलाफ जनता को संगठित करने में उपयोगी था, खासकर जब कम्युनिस्ट दल राजनीतिक रूप से परिधीय बने रहे। इसी तरह, एम.एन.रॉय का नया मानवतावाद राष्ट्रीय आंदोलन के समय में भारत में प्रचलित जीवन प्रणाली पर एक नया दृष्टिकोण प्रतीत होता है। प्रोपेल के लिए एक अच्छे जीवन का। इसलिए, मनुष्य के व्यक्तिवाद में निहित, नए मानवतावाद का दर्शन तर्क, नैतिकता और स्वतंत्रता के शाश्वत मूल्यों पर टिका हुआ है, जिन्हें आधुनिक समय में लोगों के जीवन की अंतर्निहित विशेषताओं पर बल दिया गया है। नए मानवतावाद के सिद्धांत को एक रॉय के रूप में प्रस्तुत करना जीवन के एक ऐसे मॉडल की वकालत करना चाहता है जिसकी मानव जीवन के सभी पहलुओं पर एक अलग छाप हो। इस प्रकार, राजनीतिक क्षेत्र में, वह एक संगठित लोकतंत्र की स्थापना का आह्वान करते हैं, जो एक दल रहित राज्य व्यवस्था होगी जहां राजनीति का संचालन स्वाभाविक रूप से मानवतावादी होगा। आर्थिक रूप से, नया मानवतावाद एक सहकारी अर्थव्यवस्था प्रदान करना चाहता है जहां उत्पादन के साधनों के सांप्रदायिक स्वामित्व के तहत मानवीय जरूरतों को पूरा करने के एकमात्र उद्देश्य के साथ उत्पादन किया जाएगा। इसी तरह, नए मानवतावाद के तहत सामाजिक व्यवस्था को लोगों के बीच एक गहरी सामाजिक एकजुटता के प्रसार के रूप में चिह्नित किया जाएगा, जो कि वर्ग संघर्ष की धारणा के खिलाफ है, जिसे मार्क्सवादी चीजों की योजना के तहत समाज में व्याप्त पाया गया है। फिर भी, जो झूठ लगता है, वह अंतिम दौर में नई मानवतावाद क्रांति के दर्शन का आधार है। इस प्रकार, नए मानवतावाद के सिद्धांत की व्यापकता और ताज़ा परिप्रेक्ष्य के बावजूद, इसके कुछ हिस्सों में दुखद बात यह है कि भारत में इसे बहुत कम लेने वाले मिले हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि एम.एन.रॉय द्वारा अपने पूरे जीवन में शुरू किए गए बौद्धिक उद्यमों के लगभग सभी पहलुओं पर एक ही त्रासदी का दौरा पड़ता है।

निष्कर्ष

एम.एन. रॉय को अक्सर भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन के संस्थापकों में से एक माना जाता था, उन शुरुआती मार्क्सवादियों में से एक थे जिन्होंने भारतीय सभ्यता के सामाजिक परिवर्तन के मुद्दे को राष्ट्रवाद के ढांचे से अलग समझने का प्रयास किया था। एम'एन' रॉय को राजनीति और दर्शन पर आधुनिक भारतीय लेखकों में सबसे अधिक विद्वान माना जाता था। वह एक राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी और सबसे बढ़कर एक मानवतावादी दार्शनिक थे। कट्टरपंथी मानवतावाद के उनके दर्शन को सबसे महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है, जो भारतीय लोकतंत्र को एक मजबूत आधार प्रदान कर सकता है। रॉय के कट्टरपंथी मानवतावाद का मूल एक इंसान के रूप में व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक जोर देने में निहित है। स्वतंत्र विचार के एक विश्वासी के रूप में, उनका कट्टरपंथी मानवतावाद मार्क्सवाद के प्रति उनके आलोचनात्मक रवैये का परिणाम है। नया मानवतावाद एक सामान्य धन और स्वतंत्र व्यक्ति के बंधुत्व के आदर्श के प्रति वचनबद्ध है। वह एक आध्यात्मिक समुदाय या एक सर्वदेशीय मानवतावाद की याचना करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राय का मौलिक मानवतावाद कि कई आधारों पर आलोचना की गई है, कई आलोचनाएं सही भी हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि मानवतावाद का सिद्धांत अव्यावहारिक है। राय के विश्व बंधुत्व की कल्पना निराधार नहीं है। इसमें कोई झूठ नहीं है कि वर्तमान राजनीति में राजनीतिक दल ही भ्रष्टाचार के जनक हैं। इसी प्रकार अन्य आधारों पर यह कहा जा सकता है कि भारत तथा पाश्चात्य जगत के लिए राय का मौलिक मानवतावाद एक महत्वपूर्ण देन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- रॉय एम.एन., 1922 'एट द क्रॉसरोड्स', द वैनगार्ड ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस, 1(3{15 जून})।
- रॉय, एम.एन., 1923, 'स्वराज की परिभाषा', द वैनगार्ड ऑफ द इंडियन इंडिपेंडेंस, 11(3[11 अप्रैल])।
 - 1944. वैज्ञानिक राजनीति। कलकत्ता: पुनर्जागरण प्रकाशक।
 - 1945. द प्रॉब्लम फ्रीडम। कलकत्ता: पुनर्जागरण प्रकाशक।

- 1947. नया मानवतावाद: एक घोषणापत्र। कलकत्ता पुनर्जागरण प्रकाशक।
- 1955. कारण, स्वच्छंदतावाद और क्रांति। वॉल्यूम III। कलकत्ता। पुनर्जागरण प्रकाशक।
- 1971. संक्रमण में भारतीय। बॉम्बे: नचिकेता पब्लिशर्स।
- के.सी. जेना; पॉलिटिकल फिलॉसफी में एम. एन. राँय का योगदान, एस. चंद एंड कंपनी (प्राइवेट।) लिमिटेड, दिल्ली, पृष्ठ, 142
- एम. एन. राँय; राजनीति, शक्ति और दल, अजंता प्रकाशन, दिल्ली, 1960, पृष्ठ.133।
- सदानंद तलवार, एम. एन. राँय के राजनीतिक विचार, खोसला पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1978, पृष्ठ.13-14।
- एम.एन. राँय, कारण, स्वच्छंदतावाद और क्रांति, पुनर्जागरण प्रकाशक, कलकत्ता, 1952, पृष्ठ 250।
- जी. पी. भट्टाचार्य; इवोल्यूशन ऑफ पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ एम. एन. राँय, द मिनर्वा एसोसिएट्स, कलकत्ता, 1971, पृष्ठ 111।
- एम. एन. राँय; नई मानवतावाद, अजंता प्रकाशन, दिल्ली, 1981, पृष्ठ 51-52।
- जी. पी. भट्टाचार्य; सेशन; सीआईटी, पृष्ठ 134.
- कृष्ण चंद्र जेना; एम. एन. राँय का राजनीतिक दर्शन में योगदान, एस. चंद एंड कंपनी, दिल्ली, 1968,
- वी.एम. तारकुंडे, मानवतावादी आंखों के माध्यम से, अजंता प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 37
- हैथकोक्स, जे.पी. 1971। भारत में साम्यवाद और राष्ट्रवाद: एमएन राँय और कमिटर नीति, 1920-39। प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
- कविराज, सिदिप्त, 1986। थॉमस पेंथम और केनेथ एल. ड्यूश (संस्करण), पॉलिटिकली थॉट इन मॉडर्न इंडिया में 'द हेटेरोनिमस रेडिकलिज्म ऑफ एम.एन.राँय'। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
- ओवरस्ट्रीट, जी.डी. और मार्शल विंडमिलर। 1960. भारत में साम्यवाद, बॉम्बे: बारहमासी प्रेस।
- रे, सिबनारायण (अन्य)। 2000ए, एम.एन.राँय के चयनित कार्य, 1917-22। खंड I. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

डॉ बृजेन्द्र कुमार त्रिपाठी*

असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र, श्री कृष्ण महिला महाविद्यालय, बेगूसराय

Corresponding Author

डॉ बृजेन्द्र कुमार त्रिपाठी*